भागलपुर जागरण

# पौधों को उजाड़े तो खुद उजड़ जाओगे

आनंद कुमार

वीपी प्रसाद

टीएनबी कॉलेज के बॉटनी विभाग मे सेमिनार के दौरान प्रोजेक्टर पर समझाते वैज्ञानिक। जागरण

**जागरण संवाददाता,भागलपुर:** टीएनबी कॉलेज के बॉटनी विभाग में प्लांट टेक्सोनॉमी के नेशनल वर्कशॉप में भविष्य के वैज्ञानिकों को तैयार किया जा रहा है। बॉटनी के वैज्ञानिकों समाज को वर्कशॉप के जरिए संदेश दे रहे हैं कि अगर पौधों को उजाड़ा गया तो इंसान की दुनिया भी उजड़ जाएगी। पौधों को बसाने पर बल दिया जा रहा है।

वर्कशॉप में पौधों की पहचान पर कायम संकट को लेकर गहन मंथन किया जा रहा है। ज्ञान की इस गंगा में प्रतिभागी अपने नॉलेज को अपटेड कर रहे हैं। वर्कशॉप का समापन 27 फरवरी को होगा। बॉटनी विभाग के शिक्षक प्रो. एच के चौरसिया की पहल पर इस तरह का वर्कशॉप टीएनबी कॉलेज में हो रहा है। वर्कशॉप में देश के टॉप क्लास के वैज्ञानिकों से पौधों की पहचान का ज्ञान प्रतिभागी पा रहे हैं।

बुधवार को बॉटनिकल सर्वे ऑफ इंडिया कोलकाता से आए करीब आधा दर्जन वैज्ञानिकों का व्याख्यान हुआ। आगत अतिथियों का स्वागत प्रो. एच के चौरसिया ने किया।

अतिथियों ने बातचीत में भागलपुर में भी बॉटनिकल सर्वे ऑफ इंडिया के एक सेंटर की स्थापना पर बल दिया। साथ ही विवि से प्लांट टेक्सोनॉमी की बेहतर पढ़ाई के लिए इसका अलग से विभाग बनाने की वकालत की गई। बॉटनिकल सर्वे ऑफ इंडिया कोलकाता से आए युवा वैज्ञानिक डॉ. गोपाल कृष्णा एवं डॉ. आनंद का कहना है कि नई पीढ़ी में पौधों के प्रति जागरूकता बढ़ाने की जरूरत है। पौधों का लगातार दोहन हो रहा है। जिससे कई पौधों की दुनिया उजड़ रही है।

## वैज्ञानिकों से बातचीत

टाइगर की तरह बॉटनी की पढ़ाई भी मर रही है। पौधों की पहचान के तरीकों को छात्र भूल रहे हैं। ग्रुप फोरेस्ट का क्षरण हो रहा है। सबसे पुराना साइंस टेक्सोनॉमी उपेक्षित हो रहा है। नई पीढ़ी से नेचर से भाग रही है। बॉटनी के लिए यह संकट का समय है।

डॉ. बीएस खोलिया देहरादून

विवि का सिलेबस ऐसा बनाया गया है जिसमें बेसिक साइस पर कम जोर दिया गया है। किताबों में बेसिक साइंस की उपेक्षा हो रही है। बच्चे जल्दी जॉब चाह रहे हैं। फील्ड स्टडी की कमी से गुणवत्ता में गिरावट आ रही है।

डॉ. कनाद दास, पश्चिम बंगाल

## शैवाल से खेती में आएगी क्रांति

अलगी के बिना धरती फट जाएगी। समुद्र सूख जाएगी। अलगी यानी शैवाल से खेती में क्रांति आ जाएगी। शैवाल का उपयोग खेतों के लिए वरदान से कम नहीं है। बिहार एवं झारखंड में खेतीबारी में शैवालके प्रयोग को बढ़ाने की जरूरत है।

प्रो. आरके गुप्ता, वैज्ञानिक कोलकाता

पौधों के प्रति लोगों में जागरूकता आई है। बॉटनी का महत्व बढ़ा है। इंगलैंड और अमेरिकी की तरह भारत में भी बॉटनी के शोध को बढ़ावा देने की जरूरत है। बिना टेक्सोनॉमी के नॉलेज के बॉटनी की पढ़ाई में निपुणता नहीं हासिल हो सकती है।

डॉ. पी लक्ष्मी नरसिहमन उपनिदेशक बीएसआइ कोलकाता

एक पौधे को काटने में पांच मिनट का समय लगता है। लेकिन एक पौधे के विकास में 50 साल का समय लग जाता है। पौधों से लगाव पैदा करने की जरूरत है। बॉटनी का क्रेज पहले से बढ़ा है।

प्रो. पुष्पा कुमारी युवा वैज्ञानिक बीएसआइ कोलकाता

## खास बातें

- बॉटनी के वर्कशॉप में तैयार हो रहे भविष्य के वैज्ञानिक
- भागलपुर में भी खुल सकता है बॉटनिकल सर्वे ऑफ इंडिया का सेंटर
- प्लांट टेक्सोनॉमी की अलग से हो पढ़ाई
- प्लांट टेक्सोनॉमी के ज्ञान में डूबे प्रतिभागी